Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 5, April-2019, ISSN 2230-7540

छत्तीसगढ़ के ग्रामीण क्षेत्रों में भूमि की उपलब्धता एवं श्रम प्रवास

Manju Sen[1]* Dr. K. N. Dinesh[2] Dr. Suchitra Sharma[3]

[1] Research Scholar, Govt. V.Y.T.P.G. Autonomous College, Durg, Chhattisgarh

[2] Assistant Professor, Welfare College Bhilai, Durg, Chhattisgarh

[3] Assistant Professor, Govt. V.Y.T.P.G. Autonomous College, Durg, Chhattisgarh

सारांश - ***प्रस्तुत अध्ययन छत्तीसगढ़ के ग्रामीणों क्षेत्रों में भूमि की उपलब्धता एवं श्रम प्रवास पर आधारित है भारत कृषि प्रधान देश है प्राचीन काल से मनुष्य भ्रमणशील प्राणी रहा है वह भूमि और साधनों की खोज हेतु तथा सुखद जीवन की आशा लिये हुए एक स्थान से दूसरे स्थान जाता है इस प्रकार एक स्थान से दूसरे स्थान प्रवास करने का इतिहास प्राचीन व विश्वव्यापी रहा हैं। छत्तीसगढ़ राज्य में भी ग्रामीण क्षेत्र में निवासरत कृषक वर्ग जिनके पास स्वयं भूमि नहीं है तथा बहुत कम एकड खेत होने के कारण ग्रामीण कृषकों को वर्षभर रोजगार अपने निवासस्थान पर उपलब्ध नहीं हो पाता है जिसके कारण अपने परिवार के जीवकोपार्जन हेतु उन्हें अपने मूल स्थान को छोड़कर जहाँ रोजगार मिले वहाँ जाना पड़ता है। श्रम प्रवास करना पड़ता है। प्रस्तुत शोध के लिए स्तरीकृत देव निदर्शन पद्धति के द्वारा बेमेतरा विकासखण्ड के कन्तेली गाँव के 87 उत्तरदाताओं का चयन किया गया है प्राप्त तथ्य के विश्लेषण से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि ग्रामीण क्षेत्रों के अधिकांश उत्तरदाताओं के कृषि भूमि कम उपलब्धता एवं उपलब्ध भूमि सिंचित नहीं होने के कारण परिवार के जीवकोपार्जन हेतु श्रम प्रवास करना पड़ता है। जिसके कारण उनके सामाजिक जीवन पर विपरित प्रभाव पड़ता है परिवार में बिखराव व तनाव की स्थिति निर्मित होती है।***

----------X----------

प्रस्तावना

प्राचीन काल से मनुष्य भ्रमणशील प्राणी रहा है वह भूमि और साधनों की खोज हेतु तथा सुखद जीवन की आशा लिये हुए एक स्थान से दूसरे स्थान जाता है इस प्रकार एक स्थान से दूसरे स्थान प्रवास करने का इतिहास प्राचीन व विश्वव्यापी रहा हैं।[1] श्रम प्रवास एक बहुआयामी घटना है जिसका प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष प्रभाव आर्थिक विकास, जनशक्ति नियोजन, नगरीकरण और सामाजिक परिवर्तन पर पड़ता है। प्रवास की प्रवृत्ति आर्थिक अवसरों के परिवर्तन की सूचक है। वर्तमान के निरंतर परिवर्तित होते सामाजिक-आर्थिक परिवेश के सन्दर्भ में भारत की ग्रामीण जनसंख्या गाँवों से नगरों महानगरों की ओर श्रम प्रवास की प्रवृत्ति में अप्रत्याशित वृद्धि हुई है।[2] छत्तीसगढ़ की अर्थव्यवस्था ग्रामीण प्रधान है तथा यहाँ के निवासियों के जीवन का आधार कृषि है, कृषि का स्वरूप अनुपादक एवं एक फसलीय ढ़ाचे वाला है छत्तीसगढ़ के संबंध में यह कहा जाता है कि "यहाँ के निवासियों का संपूर्ण जीवन धान की उपज पर निर्भर करता है, यदि धान की उपज अच्छी नहीं हुई तो यहाँ के लोगों का जीवन वर्ष भर संकटमय हो जाता है।"[3]

अपनी आर्थिक स्थिति में सुधार हेतु तथा जीवकोपार्जन के लिए अपने मूल स्थान को छोड़कर अन्य स्थान पर जाना प्रवास कहलाता है प्रवासकर्ता को सामान्यतः प्रवास हेतु दो तत्व प्रेरित करते है आकर्षण तत्व एवं विकर्षण तत्व यदि श्रम प्रवास आकर्षण तत्व से प्रेरित होकर किया जाता है तब यह संभव की प्रवासकर्ता की सामाजिक व आर्थिक स्थिति में सुधार होता है क्यों यह प्रवास स्वैच्छिक प्रवास का स्वरूप है जो दबाव मुक्त होता है परंतु यदि प्रवास विकर्षण तत्व के दबाव में किया गया है तब इसका अर्थ है कि प्रवासकर्ता के मूल स्थान पर पर्याप्त रोजगार के साधन उपलब्ध नहीं हैं और श्रम प्रवास उसकी मजबूरी बन जाता है प्रवासकर्ता का प्रवास का उद्देश्य अपने और अपने परिवार का जीवन यापन करना है[4] छत्तीसगढ़ में श्रम प्रवास हेतु आकर्षण तत्वों की अपेक्षा विकर्षण तत्वों की प्रमुखता है छत्तीसगढ़ राज्य में भी

www.ignited.in

ग्रामीण क्षेत्र में निवासरत कृषक वर्ग जिनके पास स्वयं भूमि नहीं है तथा बहुत कम एकड खेत होने के कारण ग्रामीण कृषकों को वर्षभर रोजगार अपने निवासस्थान पर उपलब्ध नहीं हो पाता है जिसके कारण अपने परिवार के जीवकोपार्जन हेतु उन्हें अपने मूल स्थान को छोड़कर जहाँ रोजगार मिले वहाँ जाना पड़ता है। श्रम प्रवास करना पड़ता है।[5] प्रायः जिन क्षेत्रों में सिंचित कृषि भूमि उपलब्ध है वहाँ कृषक वर्ष भर अपने खेतों में फसल व सब्जीयों का उत्पादन कर लेते है और उन्हें जीवकोपार्जन हेतु अन्यत्र श्रम प्रवास नहीं करना पड़ता है।

अध्ययन के उद्देश्य -

1. उत्तरदाताओं की कृषि भूमि की उपलब्धता को ज्ञात करना।

2. अध्ययन क्षेत्र में श्रम प्रवास के पारिवारिक प्रभाव को ज्ञात करना।

अध्ययन की परिकल्पना -

1. श्रम प्रवास के कारण उत्तरदाताओं का पारिवारिक जीवन पर प्रभाव पड़ता हैं।

2. अध्ययन क्षेत्र में सिंचित कृषि भूमि की उपलब्धता कम है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में छत्तीसगढ़ के ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि भूमि की उपलब्धता एवं श्रम प्रवास के प्रभाव को जानने हेतु तथ्यों का संकलन किया है।

तथ्य संकलन एवं उपकरण प्रविधियाँ -

अध्ययन क्षेत्र में बेमेतरा जिले के बेमेतरा विकासखण्ड के कन्तेली गाँव की कुल जनसंख्या में से मतदाता में से 87 उत्तरदाताओं का चयन स्तरीकृत दैव निदर्शन पद्धति से किया गया है महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में साक्षात्कार अनुसूची एवं अवलोकन प्रविधि द्वारा तथ्यों का संकलन किया गया है।

तालिका क्रं. 1

उत्तरदाताओं की कृषि योग्य भूमि की स्थिति की उपलब्धता

क्रं.	कृषि योग्य भूमि की स्थिति	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	सिंचित	27	32 %
2.	असिंचित	48	55 %
3.	भूमिहीन	12	13 %
कुल योग		87	100 %

तालिका क्र. 2

सिंचित कृषि योग्य भूमि पर सिंचाई के साधन

स. क.	सिंचाई के साधन	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	कुआँ	05	6%
2.	ट्यूबेल	12	14%
3.	तालाब	7	8%
4.	अन्य साधन	3	3%
5	लागू नहीं	60	69%
कुल योग		87	100%

तालिका क्र. 03

एकड़ में कृषि योग्य भूमि

स. क्र.	कृषि योग्य भूमि एकड़ में	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	1 एकड से कम	42	48 %
2.	1 से 3 एकड	26	30 %
3	4 से 5 एकड	5	6 %
4	6 एकड से अधिक	2	2 %
5	लागू नहीं (भूमिहीन)	12	14 %
योग		87	100 %

तालिका क्र. 04

श्रम प्रवास के कारण उत्तरदाताओं के पारिवारिक जीवन पर पड़ने वाला प्रभाव

स. क्र.	श्रम प्रवास के कारण पारिवारिक जीवन पर पड़ने वाला प्रभाव	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	परिवार में तनाव उत्पन्न हो रहा है	40	46 %
2.	परिवार में बिखराव हो रहा है	12	14 %
3.	बच्चों की देख रेख में कमी	24	28 %
4.	वृद्धजनों की देखरेख में कमी	11	12 %
कुल योग		87	100 %

www.ignited.in

परिणाम एवं विश्लेषण -

प्रस्तुत अध्ययन में चयनित उत्तरदाताओं से भूमि की उपलब्धता के कारण किये गये श्रम प्रवास को जानने का प्रयास किया गया है जिसमें तालिका क्र. 1 से स्पष्ट कुल उत्तरदाताओं में से 55 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पास असिंचित भूमि है आधे से अधिक उत्तरदाताओं के पास असिंचित भूमि है जिसके कारण उत्तरदाता श्रम प्रवास करते हैं। तालिका क्र. 02 में जिन उत्तरदाताओं के पास सिंचित भूमि है उनके पास सिंचाई साधनों में सर्वाधिक 12 प्रतिशत उत्तरदाता ट्यूबवेल का प्रयोग करते हैं तथा 5 प्रतिशत उत्तरदाता कुआँ तथा 07 प्रतिशत उत्तरदाता तालाब के माध्यम से सिंचाई का कार्य करते है तथा मात्र 3 प्रतिशत उत्तरदाता अन्य सिंचाई के साधनों का प्रयोग करते हैं। तालिका क्रं. 03 में अध्ययन क्षेत्र में उत्तरदाताओं के पास कृषि योग्य एकड में कितनी भूमि है जानने का प्रयास किया गया है जिसमें 48 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पास एक एकड से भी कम भूमि उपलब्ध है जिसमें लगभग आधे उत्तरदाता सम्मिलित है तथा 30 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पास 1 से 3 एकड़ भूमि है तथा 4 से 5 एकड़ कृषि भूमि मात्र 6 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पास है 6 एकड़ या इससे अधिक भूमि वाले मात्र 2 प्रतिशत ही उत्तर दाता है। तालिका क्र 04 में श्रम प्रवास के कारण उत्तरदाताओं सामाजिक जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव को जानने का प्रयास किया गया है जिसमें से 46 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मत है कि श्रम प्रवास के कारण उनके परिवार तनाव उत्पन्न हो रहा है साथ-साथ 14 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मत है कि श्रम प्रवास के कारण उनके परिवार में विश्वास की स्थिति उत्पन्न हो रही है तथा 28 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि श्रम प्रवास के कारण उनके बच्चों की देखरेख ठीक प्रकार से नहीं हो पा रही है तथा 12 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि श्रम प्रवास के कारण उनके परिवार के वृद्धजनों की देखरेख में कमी आ रही है। अतः यह कहा जा सकता है कि चयनित क्षेत्र में सिंचित कृषि भूमि की अनुपलब्धता के कारण उत्तरदाता श्रम प्रवास हेतु विवश है जिसके कारण उनके पारिवारिक जीवन पर नकारात्मक प्रभाव हो रहा है।

निष्कर्ष एवं सुझाव -

प्रस्तुत अध्ययन में सिंचित कृषि भूमि की उपलब्धता तथा श्रम प्रवास के कारण पारिवारिक जीवन में पड़ने वाले प्रभाव से संबंधित प्राप्त तथ्यों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि छ.ग. के ग्रामीण क्षेत्रों में कृषकों के पास सिंचित कृषि भूमि बहुत कम उपलब्ध है जिसके कारण उत्तरदाता जीवकोपार्जन हेतु श्रम प्रवास करते है जिससे उनके पारिवारिक जीवन पर श्रम प्रवास का प्रतिकुल प्रभाव पड़ता है और उत्तरदाता पारिवारिक तनाव से गुजरते हए पारिवारिक विश्वास तक की गंभीर परिस्थितियों उत्पन्न हो रही है। अगर छ.ग. के ग्रामीण क्षेत्रों में जहाँ सिंचाई के साधन पर्याप्त नहीं है वहाँ सरकार के प्रयासों द्वारा सिंचाई के साधन उपलब्ध करोय जाये तथा ग्रामीणों को गाँव में ही रोजगार उपलब्ध हो जाये तो मनरेगा एवं विभिन्न सरकारी योजनाओं के माध्यम से तो निश्चित रूप से जीवकोपार्जन हेतु ग्रामीण को कम ही श्रम प्रवास करना पड़ेगा जिसके कारण उनके पारिवारिक जीवन में तनाव की स्थिति निश्चित रूप से कम होगी और श्रम प्रवास में कमी आयेगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची -

1. मेहर सिंह, राव (2004) ग्रामीण समाजशास्त्र अर्जुन पब्लिसिंग हाऊस अंसारी रोड दरियागंज नई दिल्ली पृ. 190
2. पंत, डी.सी. (2011) भारत में ग्रामीण विकास विश्व भारती पब्लिकेशन पृ.स. 60
3. पटेल, डी.सी. (2016). "छत्तीसगढ़ का सामान्य अध्ययन मुस्कान पब्लिकेशन बिलासपुर तृतीय संस्करण" पृ.स. 26-29
4. सिंह, कटार (2011). ग्रामीण विकास, रावत पब्लिकेशन पृ.स. 250
5. निराला, एस.एल. (2001). "छत्तीसगढ़ में श्रम प्रवास की अंतहीन दशा" शोध उपक्रम छत्तीसगढ़ शोध संस्थान रायपुर 2001

Corresponding Author

Manju Sen*

Research Scholar, Govt. V.Y.T.P.G. Autonomous College, Durg, Chhattisgarh

www.ignited.in